विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 11-12-21

वर्ग सप्तम शिक्षक राजेश कुमार पांडेय

कारक शब्द की व्युत्पति :-

कारक शब्द की व्युत्पति डुकृन्न् धातु (जिसमे 'कृ' शेष रहता है) तथा ण्वुल प्रत्यय (जिसके पुल्लिंग मे 'अक:' , स्त्रीलिंग मे 'इका' तथा नपुंसकलिंग मे 'अकम्' शेष रहता है ।)

E- डुकृन्न् धातु ('कृ') + ण्वुल प्रत्यय ('अक:/इका/अकम्')

कृ + अक:/इका /अकम् (वृद्धि कार्य)

क् ऋ +अक:/इका /अकम्

क् आर् +अक:/इका /अकम्

कारक:/कारिका/कारकम् (तीनों लिंगों मे)

कारक की परिभाषा :-

“क्रिया जनकत्वं कारकम्”

“क्रियान्वितं कारकम्”

“करोति निर्वर्तयति क्रियाम् इति कारकम् “

कारक के भेद :-

कारक के छह भेद (6 प्रकार) होते है ।

श्लोक :- “कर्ता कर्म च करणं , सम्प्रदानं तथैव च ।

अपादानादि - अधिकरणम् - इत्याहु कारकणि षट्॥ “

कर्ता कारक

कर्म कारक

करण कारक

संप्रदान कारक

अपादान कारक

अधिकरण कारक

Note:-

‘सम्बन्ध’ को कारक ना मानकर सिर्फ ‘षष्ठी विभक्ति’ माना जाता है ।

‘सम्बोधन’ को कर्ता कारक मानकर उसे प्रथमा विभक्ति मे रखा जाता है ।

अष्टाध्यायी के अनुसार कारकों का क्रम :-

अपादान कारक

संप्रदान कारक

करण कारक

अधिकरण कारक

कर्म कारक

कर्ता कारक

कारक , विधायक सूत्र व विभक्ति :-

कर्ता कारक :- “स्वतंत्र: कर्ता” (प्रथमा विभक्ति)

अर्थात वाक्य मे जो स्वतंत्र कार्य करता है वही कर्ता कहलाता है ।

जैसे :- रामः आम्रं खादन्ति । (यहां रामः कर्ता कारक है ।)

कर्म कारक :- “कर्तु ईप्सिततमं कर्म: “ (द्वितीया विभक्ति)

अर्थात वाक्य मे कर्ता की सबसे बड़ी इच्छा ही कर्म कहलाता है ।

जैसे :- रामः आम्रं खादन्ति । (यहां आम्रं कर्म कारक है ।)

करण कारक :- “साधकतमं करणम् “ (तृतीया विभक्ति)

अर्थात वाक्य मे जो कर्ता की सहायता (साधन) करता है वही करण कहलाता है ।

जैसे :- रामः बाणेन हतो रावणम् । (यहां बाणेन करण कारक है ।)

सम्प्रदान कारक :- “कर्मणायमभि प्रैति सः सम्प्रदानम् “ (चतुर्थी विभक्ति)

अर्थात वाक्य मे जिसके लिए दान दिया जाये वही संप्रदान कारक है ।

जैसे :- रामः विप्राय धनं ददाति । (यहां विप्राय मे संप्रदान कारक है ।)

Note :- ‘यच्छ’ तथा ‘दा’ धातु दोनों ही देने के अर्थ में प्रयुक्त होती है।

अपादान कारक :- “ध्रुवमपाये अपादानम् “ (पंचमी विभक्ति)

अर्थात वाक्य मे अपने स्थान से दूर होने के अर्थ में स्थान में अपादान कारक है ।

जैसे :- पत्राणि वृक्षात् पतन्ति । (यहां वृक्षात् मे अपादान कारक है ।)

अधिकरण कारक :- “आधारो अधिकरणम् “ (सप्तमी विभक्ति)

अर्थात वाक्य मे वस्तु या व्यक्ति के आधार में अपादान कारक का प्रयोग किया जाता है

जैसे :- रामः कक्षायां पठति । (यहां कक्षायां मे अधिकरण कारक है ।)